मासूम-ए-कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी

मोहतरमा निसार फ़ातिमा साहिबा

ऐसे दौर में जब कि एतेक़ादी बातें तिरछी निगाहों से देखी जाती हैं और उसके इस नुक्ते पर गहरी निगाह नहीं डाली जाती कि इस अक़ीदे के पीछे क्या कामियाबी छुपी हुई है। जनाब मासूमा (स0) की पैदाईश और शादी के बारे में तफसीली वाक़ेआत बयान करना तो शायद ख़ुश एतेक़ादी और मज़हब परस्ती पर लाद दिया जायेगा।

इसलिए मैं अपनी बहनों के सामने मासूम–ए–कौनैन (स0) की अमली ज़िन्दगी के कुछ वाक़ेआत पेश करना चाहती हूँ लेकिन इससे पहले यह ज़हन में रखना ज़रूरी है कि जनाब मासूमा सलामुल्लाहि अलैहा की उम्रे मुबारक सिर्फ पाँच साल की थी कि आपकी माँ जनाब ख़दीजतुल कुबरा का इन्तेक़ाल हो गया और आपकी सारी की सारी परवरिश सरदारे दो जहाँ के साये में हुई। अब चाहे आँहज़रत (स0) ने ज़िन्दगी के हर हिस्से की तालीम व तरबियत अमल से की हो या बताकर और नसीहत देकर। लेकिन यह मानना पड़ेगा कि औरत की तालीम व तरबियत का मसअला एक मर्द के हाथ से अन्जाम पाकर दुनिया की औरतों के लिये हर पहलू से (दीनी हो या दुनियावी) नमून–ए–अमल बन जाना अगर इसे करिश्मा नहीं कहा जा सकता तो ताज्जुब वाला इस माने में ज़रूर है कि आज तक कोई मिसाल दुनिया में ऐसी नहीं मिलती कि सिर्फ बाप की तालीम व तरबियत से बेटी ऐसी अच्छी ख़ूबियों और अच्छे कामों वाली हो गई हो।

मेरी इज़्ज़तदार बहनों! अपनी जगह पर जब आप ग़ौर करेंगी तो मालूम होगा कि औरत के लिये शौहर के घर जाकर सबसे बड़ा फ़र्ज़ जो उसके ज़िम्मे होता है वह शौहर की इताअत और शौहर का हुक्म मानना है। इसमें मासूम–ए–कौनैन अपनी मिसाल आप ही हो गईं। अल्लाह! अल्लाह!! किस औरत का हौसला ऐसा है कि वह पूरी ज़िन्दगी अपने शौहर से किसी तरह की फरमाइश इस ख़याल से न करे कि शायद मेरा शौहद मजबूर हो तो उसे शर्मिन्दा होना पड़े। मुझे तो मासूमा (स0) की ज़िन्दगी में कोई मौक़ा इसके अलावा नज़र नही आता कि एक बार बीमारी के मौक़े पर शौहर के बार–बार कहने पर अनार की ख़्वाहिश कर दी थी ताकि दुनिया आगे चलकर इन वाक़ेआत से कहीं यह नतीजा न निकाल बैठे कि ख़ुदा की पनाह रसूल (स0) की बेटी के मिज़ाज में घमण्ड था वरना अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम जैसे शौहर के बार–बार कहने पर फरमाइश न करना क्या मतलब?

इसके अलावा मुहब्बत व ख़िदमत व वफादारी का ताल्लुक़ जहाँ तक था उसकी कैफियत को कोई बाबुल इल्म से पूछे तो मालूम हो कि वफात के बाद आपको वह सुकून व इत्मिनान नसीब न हुआ जो जनाबे सैय्यदा (स0)

की ज़िन्दगी में हासिल था। ख़ुद जनाबे अमीर (अ0) के वह अलफाज़ जो वफात के बाद मुबारक ज़हन से निकले आज तक दलील हैं। अब इससे ज़्यादा और क्या सुबूत होगा।

दूसरा अहम फ़र्ज़ औलाद की तालीम व तरबियत का औरत के ज़िम्मे होता है जिसे औलाद से इतनी मुहब्बत व उलफत होने के बावजूद कि अगर मस्जिदे नबवी से आने में ज़रा सी देर हुई या कोई बच्चा रसूल (स0) की मस्जिद से रोता हुआ आया तो आपने चादरे इस्मत व तहारत ओढ़ ली, मोज़े पहन लिये जिसके बारे में कई वाक़ेआत तारीख़ और सीरत की किताबों में लिखे हैं और जानकार लोग इनको ख़ूब जानते हैं फिर भी तालीम व तरबियत का उनवान कितना अच्छा और आसान था कि जब बच्चे मस्जिद नबवी से इलाही अहकाम और रिसालत के हुक्म रसूल (स0) की ज़बान से सुनकर आते थे तो आप उसे बहुत ही ख़ूबसूरत और मुहब्बत के अन्दाज़ में यह कह कर दोहरवाती थीं कि ''बेटा आज तुम्हारे नाना ने नसीहत में क्या बयान फरमाया:''

चुनानचे एक रोज़ जनाब अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) बेटे की समझदारी की ख़बर पाकर ख़ुश हुए और अन्दाज़े बयान देखने के लिये पर्दे के पीछे बैठे। माँ ने आदत के मुताबिक़ जनाब इमाम हसन (अ0) से पूछा– शहज़ादे ने विलायत की ख़ुशबू से असर लेते हुए अर्ज़ किया ''ऐ अम्मा जान आज तो ज़बान लड़खड़ाती है शायद मेरे बाबा देख रहे हैं।''

अब यह खुली हुई बात है कि जो कुछ क़ुर्आन में है। चाहे दीनी हो या दुनियावी, तहज़ीबी हो या कारोबारी सब कुछ रसूल (स0) ने उम्मत तक पहुँचाया और उसकी मुकम्मल तालीम नसीहत व फरमान सब कुछ बच्चों ने माँ तक पहुँचाया और माँ ने दोहराने के तौर पर सुना। बस क्या आज हमारी बहनों को अपने बच्चों में तालीम व तरबियत की तरफ इसका दसवाँ हिस्सा भी ख़याल है! लाख मक्तब जाएँ, मदरसे में किताबें उलटें, घर पर पढ़ाने वाले लगे हों मगर कभी किसी ख़ुशनसीब माँ को इसकी तौफीक़ नहीं होती और न वह इस बात को समझती हैं कि फितरी मुहब्बत व उलफत की वजह से मेरे इस ध्यान का कितना गहरा असर छोटे बच्चों के दिल पर पड़ेगा।

अफसोस! मेरा तो ख़याल है कि माँ का थोड़ा सा ध्यान इस तरह होने से उस्ताद की मेहनत कभी बर्बाद न होगी और लड़के के दिल में माँ के ख़ुश रखने का शौक़ उनकी तालीम को दिन दूनी रात चौगनी कर देगा क्योंकि माँ की गोद लड़के के लिये दुनिया की जन्नत है।

तीसरा फ़र्ज़ घरेलू ज़िम्मादारियों का है कौन नहीं जानता कि शहंशाहे दो जहाँ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ रसूलुस्सक़लैन की इकलौती चहीती बेटी होकर झाड़ू देना, बर्तन धोना, आटा गूँधना, तन्नूर रौशन करना, सीना पिरोना, चक्की चलाना, ऊन कातना, बच्चों की परवरिश, शौहर की ख़िदमत, पड़ोसियों की मदद और उनके ग़म में शरीक होना कौन सा काम ऐसा था जो जनाब फ़ातिमा (स0) अपने हाथों से ख़ुद अन्जाम नहीं देती थीं यहाँ तक कि जो दिन जनाबे फ़िज़्ज़ा के काम करने का नहीं होता था जिन्हें आपकी ख़ादमा होने की इज़्ज़त मिली थी उस दिन उनके सामने तक खाना ले जाना आपकी आदत थी। लेकिन कभी किसी को शिकायत का मौक़ा न मिला। न कहीं से इस बात का पता चलता है कि आपने

काहिली व सुस्ती को रास्ता दिया हो या किसी की शिकायत की हो। बवजूद इन ज़िम्मादारियों के हमेशा सजद–ए–इलाही में रहीं और एक ख़ुदा के डर के साथ चुनानचे जनाब इमाम हसन अलैहिस्सलाम बयान करते हैं कि जब अम्मा जान मेहराबे इबादत में खड़ी होती थीं तो पूरा जिस्म बेद की तरह काँपता नज़र आता था और मुबारक चेहरा ज़र्द हो जाता था और इसे तो आम लोग देखते थे कि हर वक़्त आपके मुबारक हाथों से घर के कामों को पूरा किया जाता था और ज़बान माबूद के ज़िक्र में लगी रहती थी। यही वह अल्लाह की इबादत की बातें थी कि जब कभी तस्बीह पढ़ते–पढ़ते ऊँघ आ जाती तो फरिश्ते अल्लाह के हुक्म से आकर तस्बीह पढ़ते थे और दाने चलते हुए लोगों को नज़र आते थे।

अब बहनें ग़ौर करें कि इन घरदारी के कामों का मुकम्मल तरीक़े से खुद अपने हाथों से अन्जाम देना अपने आप में ऐसा था कि अगर इनके माली फायदों को जिसके ज़रिये से मर्द की आमदनी को यक़ीनी ताक़त पहुँचेगी नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए तो भी कितने फायदे इससे ऐसे हासिल होंगे जो आज सैकड़ों रुपये के ख़र्च के बाद भी हासिल नहीं हो सकते जैसे सुब्ह सवेरे जागने का फायदा क्योंकि आम तौर पर इन कामों को पूरा करने की फिक्र में हमेशा सुबह सवेरे उठना पड़ेगा। बस वह नुक़सानात जो सात–सात आठ–आठ बजे तक पलंग पर करवटें बदलने से सामने आते हैं यानी फेफड़ा ख़राब हो जाता है। ख़ाने के हाज़मे में ख़राबी पैदा होती है। सुस्ती व काहिली महसूस होती है, जो अपने आप जाती रहेंगी और दूसरी बीमारियों का शिकार न होंगे। अच्छी ख़ासी कसरत हो जाएगी। जिस्म मज़बूत व तन्दुरुस्त होगा। खाना पूरी तरह हज़म होगा। पेट और जिगर की कमज़ोरी की शिकायत ख़त्म हो जाएगी। चेहरे पर ख़ून नज़र आने लगेगा। इसके अलावा डाक्टरी और शरई उसूल के हिसाब से रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर हिस्से में जागने की ज़रूरत होगी जिससे अपने आप तन्दुरुस्ती बाक़ी रहेगी और यही तरीक़ा रात के पहले हिस्से में सोने और आख़िर में जागने का फितरत ने भी बताया है। माएँ जानती हैं कि मासूम बच्चे रात के शुरु में सोते हैं और आख़िर हिस्से में जागते हैं।

इसलिए अब हमारी बहनें हमें बताएँ कि जनाबे फ़ातिमा (स0) का इस तरह से अपनी पाक व रौशन ज़िन्दगी में अमली नमूना पेश करना क्या हमें यही सबक़ देता है कि हम उनसे जुड़े होने का दावा करे। बग़ैर वज़ू नाम लेना अदब के ख़िलाफ जानें। उनकी नज़र व नियाज़ ढाँक कर दें, अपनी बेटियों का नाम उनके नाम व ख़िताबात व अलक़ाब के सहारे रखने में दोनों जहानों की कामियाबी समझें। उनकी मुसीबतों और परेशानियों पर गिरया करें। मासूमा (स0) को तकलीफ देने वालों से बेज़ारी करें लेकिन उनकी अमली तालीम को ओछी नज़र से भी न देखें। मिसाल के तौर पर बयान करती हूँ कि हमको अच्छी तरह मालूम है कि आप मुसीबत तन्गी व परेशानियों के मौक़ों पर जो इस पाक व पाकीज़ा घर की इस हिसाब से ख़ुसूसियत थी कि न जाने इस घर की फाक़ाकशी कुदरत को कितनी पसन्द थी लेकिन सिवाए सब्र व शुक्र के कभी कोई लफ्ज़ निकलना तो दूर रहा दिल में भी बेचैनी और परेशानी का शक भी पैदा न हुआ। हमेशा खजूर के पत्तों के पेवन्द की चादर सर पर रही मगर अल्लाह के शुक्र में ज़बान हिलती रही। जिसका ज़िक्र आज तक हम फख़्र के साथ

अपनी महफिलों, मज्लिसों, घरों, अज़ीज़ों, दोस्तों में करते हैं लेकिन किसी मोमिना के पेवन्द वाले कपड़ों को देखकर हमारी निगाहों में उसकी इज़्ज़त कम हो जाती है। हम उसका मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं। सामने न सही तो पीठ पीछे जो कुछ जी में आता है कह गुज़रते हैं। यह नहीं सोचते कि अगर पेवन्द लगाकर पहनना या परेशानी और तकलीफ में ज़िन्दगी गुज़ारना हमारे यहाँ शर्म की निशानी और बेइज़्ज़ती व मज़ाक है तो हमारे इस निशानी बनाने से मासूम–ए–कौनैन (स0) का क्या दर्जा रह जाता है।

इसलिए हम को ऐसी बातों से बचना चाहिए और उन मौक़ों पर जिनमें मासूम–ए–कौनैन के तज़करें होते हैं उनकी अमली ज़िन्दगी को बयान करके अपनी बहू, बेटियों को उनके अपनाने का सबक़ पढ़ना चाहिए ताकि अच्छे अख़लाक़, रवादारी, इन्साफ, हक़ बात कहना, हमदर्दी, बर्दाश्त और ईसार पैदा हो और हम मेहनत मज़दूरी और परेशानी से मुहब्बत करके सही मानों में मासूम–ए–कौनैन की पैरवी करने वाली कहलाएँ। मैं सही अर्ज़ करती हूँ कि हमारे लिये यही तरीक़ा बरकत व कामियाबी वाला है और हम इसको अपनाकर दीन व दुनियामें बुलन्द होंगे वरना ऐसे दौर में जब कि मग़रिबी ज़हरीली हवाएँ बहुत ही तेज़ी के साथ क़ौमियत व मज़हबियत को ज़हर से भरती जा रही हैं इस तरह रुख़ करने से हमारी इज़्ज़त, हमारी अज़मत, हमारी पाकदामनी, हमारी इस्मत, हमारा दीन, हमारा मज़हब परेशानी में पड़ जायेगा क्योंकि हमारे बच्चे हमारी इस रोज़ाना नये रंग में बदलने वाली हालत से सबक़ लेकर बहुत जल्द किसी दूसरे रंग में रंग उठेंगे जिसमें दुनिया व आख़िरत दोनों में नुक़सान उठाएँगे। □□□

शेष....इमामे सज्जाद (अ0) की समाजी शख़्सितय

इमाम (अ0) ने अपने इरादे की वज़ाहत करते हुए फरमायाः आयत का इसके बाद का हिस्सा पढ़ो जिसमें मोमिनों की ख़ूबियाँ बयान हैं। ''यह लोग तौबा करने वाले, इबादत अन्जाम देने वाले, ख़ुदा की तारीफ करने वाले, ख़ुदा के रास्ते में सफर करने वाले, रुकू करने वाले, सिजदा करने वाले, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों की हिफाज़त करने वाले हैं, ऐ पैग़म्बर (स0) आप इन्हें जन्नत की खुशख़बरी दे दें'' फिर फरमाया ''अगर इन ख़ूबियों वाले मोमिन हों तो हम जिहाद को किसी चीज़ पर तरजीह नहीं देंगे।

इस जवाब में इमाम सज्जाद (अ0) ने अपनी सियासत, अपना अन्दाज़ और अपने दौर के सुधार की कोशिश के तरीक़े को बिलकुल साफ कर दिया। और उन वजहों को भी बता दिया जिनकी बुनियाद पर इमाम को वह तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ा था। बस इमाम सज्जाद का क़याम न करना और उमवी हुकूमत से जंग न करना इस वजह से न था कि आप दुनियावी आराम चाहते थे। जैसा कि इबाद अलबसरी के सवाल से ज़ाहिर होता है। बल्कि इमाम (अ0)का यह इक़दाम सिर्फ इसलिए था कि आप यक़ीनी तौर पर यह जानते थे कि जंग में जीत का कोई सवाल नहीं, बल्कि इन हालात में वक़्त के हाकिम के ख़िलाफ कोई इक़दाम भी इसके बिलकुल उलट (शर्म और हार) होगा। और इसी वजह से इमाम (अ0) ने इन हालात में उम्मत के सुधार का एक नया तरीक़ा अपनाया जिसके गोशों की तरफ हम आगे इशारा करेंगे। □□□